बी.ए/खण्ड-द्वितीय हिन्दी (प्र0) अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, राहिका, मधुबनी

दिनांक : 05.04.2021

पत्र : चतुर्थ/ छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

'कलगी बाजरे की' कविता की व्याख्या / अज्ञेय

'कलगी बाजरे की' कविता प्रयोगवाद के जनक अज्ञेय की एक प्रसिद्ध रचना है। वे नये उपमानों और प्रतीकों के प्रयोग में सिद्धहस्त थे। जिसका एक उत्कृष्ट उदाहरण 'कलगी बाजरे की' है। कविता विषय पुराना है, पर प्रतीक, उपमान और कहने का ढंग नया है। वे अपनी प्रेमिका के सौन्दर्य की प्रशंसा नये उपमानों और प्रतीकों से करते हुए, नये शब्दावली के प्रयोग के साथ वे कहते हैं —

हरी बिछली घास।
दोलती कलगी छरहरी बाजरे की।

अगर मैं तुमको
लजाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुंई,
टटकी कली चम्पे की
वग़ैरह, तो

कवि कहता है कि अब ~~यदि मैं तुमको~~ मुझे तुमको बिछली घास कहना और डोलती बाजरे की छरहरी कलगी कहना ज्यादा सच्चा, ज्यादा प्यारा और ज्यादा संतोषजनक प्रतीत होता है। अब मैं तुमको लजाती शाम के आकाश की अकेली तारिका नहीं कहता हूँ और ना ही मैं तुम्हें शरद ~~ऋतु~~ के सुबह में नीहार (कुहासा) से नहायी हुई चम्पा पुष्प की ताजा कली सदृश्य नहीं

कहूँगा। इसको मतलब ये नहीं कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता या मेरे प्यार की ऊर्जा निर्बल हो गयी है या तुम्हारे प्रति मेरा पहले जैसा प्यार नहीं रहा। बल्कि बात दूसरी है।

कवि की दृष्टि में नारी सौन्दर्य को व्यक्त करने वाले उपमान अर्थात चम्पे की कली या साँझ की तारिका जैसे उपमानों में अब वह ताजगी नहीं रही। ये अब नायिका के सौन्दर्य को पहले की तरह बेजोड़पन से व्यक्त करने में कवि को ~~सफल~~ समर्थ नहीं दिख रहा।

(क्रमशः ....)